आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 14 अंक : 02 अक्टूबर, 2026 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास















कुलगुरु सन्देश

वन्यजीव संरक्षण : प्रकृति के संतुलन की अनिवार्य कड़ी

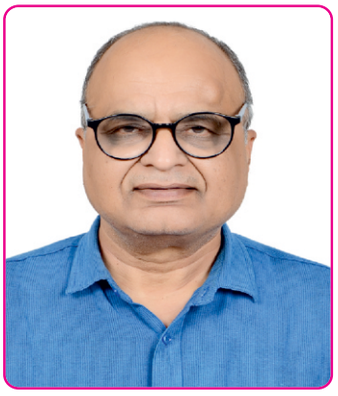

वन्यजीव हमारी प्राकृतिक विरासत, जैव विविधता और स्वस्थ पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। प्रकृति में प्रत्येक जीव की अपनी विशिष्ट भूमिका है। छोटे जीवों से लेकर बड़े वन्य प्राणियों तक प्रत्येक प्रजाति खाद्य शृंखला, परागण, बीज प्रसार, पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण तथा पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसलिए वन्यजीव संरक्षण का अर्थ केवल किसी प्रजाति को बचाना नहीं, बल्कि संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र और उसके प्राकृतिक संतुलन की रक्षा करना है। भारत अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए विशिष्ट पहचान रखता है। राजस्थान की भौगोलिक एवं पारिस्थितिक विविधता भी वन्यजीव संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। मरुस्थलीय क्षेत्रों, अरावली पर्वतीय भूभाग, वन क्षेत्रों, घासभूमियों तथा आर्द्रभूमियों में अनेक विशिष्ट वन्यजीव प्रजातियाँ पाई जाती हैं। चिंकारा, काला हिरण, नीलगाय, रेगिस्तानी लोमड़ी तथा ग्रेट इंडियन बस्टर्ड सहित अनेक वन्यजीव प्रदेश की प्राकृतिक संपदा का हिस्सा हैं। इनके संरक्षण के लिए प्राकृतिक आवासों और पारिस्थितिक तंत्र की सुरक्षा आवश्यक है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आवासों का क्षरण एवं विखंडन, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता दबाव तथा मानव–वन्यजीव अंतःक्रिया जैसी चुनौतियाँ संरक्षण के लिए गंभीर विषय हैं। इनसे निपटने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान, आधुनिक तकनीक, प्रभावी निगरानी तथा स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की भूमिका इस दिशा में महत्वपूर्ण है। पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की विशेषज्ञता का उपयोग ''वन्यजीव स्वास्थ्य, रोग निदान एवं नियंत्रण, रोग निगरानी, जैव विविधता संरक्षण तथा मानव–वन्यजीव अंतःक्रिया'' से जुड़े विषयों में अनुसंधान एवं ज्ञान–विस्तार के लिए किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों, पशुचिकित्सा विशेषज्ञों, पशुपालकों एवं ग्रामीण समुदायों में वन्यजीव संरक्षण के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संवेदनशीलता विकसित की जा सकती है। इसी संदर्भ में '''वन हेल्थ''' की अवधारणा का विशेष महत्व है। मानव, पशु एवं पर्यावरण का स्वास्थ्य परस्पर जुड़ा हुआ है। वन्यजीवों में होने वाले रोग मानव एवं पालतू पशुओं को भी प्रभावित कर सकते हैं। अतः वन्यजीव स्वास्थ्य की निगरानी, रोगों की समय पर पहचान एवं रोकथाम तथा पर्यावरणीय परिस्थितियों का वैज्ञानिक अध्ययन समग्र स्वास्थ्य सुरक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विश्वविद्यालय अनुसंधान, प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग एवं जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से इस समन्वित दृष्टिकोण को सुदृढ़ कर सकता है। वन्यजीव संरक्षण केवल सरकार या किसी एक संस्था की जिम्मेदारी नहीं है। स्थानीय समुदायों, किसानों, पशुपालकों, विद्यार्थियों और आम नागरिकों की सहभागिता भी उतनी ही आवश्यक है। प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग तथा वन्यजीवों के प्रति संवेदनशील व्यवहार अपनाना हम सभी का दायित्व है। जन–जागरूकता और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से ही संरक्षण के प्रयासों को स्थायी सफलता मिल सकती है।

आइए, हम सभी वन्यजीवों एवं उनके प्राकृतिक आवासों के संरक्षण, जैव विविधता की सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए अपने दायित्वों के प्रति सजग होने का संकल्प लें। प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व की भावना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामूहिक सहभागिता ही आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित, समृद्ध एवं संतुलित भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगी।

डॉ. सुमंत व्यास



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने किया पशु अनुसंधान केन्द्र, चांदन (जैसलमेर) का निरीक्षण



राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने 7 सितम्बर को पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन (जैसलमेर) का दौरा किया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने फार्म में पशु उत्पादकता बढ़ाने हेतु आधुनिक फार्म तकनीकों का उपयोग करने हेतु सुझाव दिया तथा थारपारकर गाय के महत्व को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र का पर्यटन एवं आमजन के लिए विशेष केन्द्र के रूप में विकसित करने का सुझाव भी दिया। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. मनीष कुमार ने केन्द्र पर चल रही विभिन्न परियोजओं जैसे थारपारकर गाय नस्ल के संरक्षण एवं संवर्धन परियोजना, मारवाड़ी बकरी संरक्षण परियोजना, चारा एवं चारा बीज उत्पादन परियोजना तथा पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम आदि गतिविधियों एवं उपलब्धियों से अवगत करवाया। इस अवसर पर निदेशक कार्य (भू संपदा) डॉ. नरेन्द्र सिंह, ई.ओ. प्रतिभा पुरोहित एवं केन्द्र के कर्मचारी उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय गिद्ध जागरूकता दिवस पर सेमिनार



राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के वन्यजीव प्रबंधन एवं स्वास्थ्य अध्ययन केंद्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय गिद्ध जागरूकता दिवस–2026 के अवसर पर 5 सितम्बर को विशेषज्ञ व्याख्यान एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि गिद्ध हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के अत्यंत महत्वपूर्ण घटक हैं। इनके संरक्षण के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जन–जागरूकता तथा पशुचिकित्सा एवं वन्यजीव क्षेत्र के बीच समन्वय आवश्यक है। भावी पशुचिकित्सकों को वन्यजीव संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना समय की आवश्यकता है। कार्यक्रम के अंतर्गत राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर के प्राणीशास्त्र विभाग के डॉ. प्रताप सिंह ने "आकाश के राजा : खतरे और संरक्षण की रूपरेखा" विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान दिया। व्याख्यान में गिद्धों के पारिस्थितिक महत्व, उनकी घटती संख्या, मानव जनित खतरों तथा संरक्षण की प्रभावी रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यकारी अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. मनीषा माथुर ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि गिद्ध प्रकृति के स्वच्छता प्रहरी हैं और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। मंच का संचालन करते हुए केन्द्र के प्रधान अन्वेषक डॉ. जे.पी. कच्छावा ने बताया कि गिद्ध मृत पशुओं के शवों का प्राकृतिक रूप से निस्तारण कर पर्यावरण को स्वच्छ रखने तथा संभावित रोगों के प्रसार को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि गिद्ध संरक्षण केवल वन्यजीव संरक्षण का विषय नहीं है, बल्कि यह पशु स्वास्थ्य, जनस्वास्थ्य और पर्यावरणीय संतुलन से भी सीधे जुड़ा हुआ है। कार्यक्रम के अंत में निदेशक क्लिनिकस प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास, आई.वी.आर.आई., बरेली के एक्रेडिटेशन की पीयर रिव्यू टीम के अध्यक्ष मनोनीत

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास को आई.वी.आर.आई. डीम्ड विश्वविद्यालय, इज्जतनगर, बरेली (उ.प्र.) की आई.सी.ए.आर. के नेशनल एग्रीकल्चरल एजुकेशन एक्रेडिटेशन बोर्ड से मान्यता के लिए गठित उच्च स्तरीय पीयर रिव्यू टीम (पी.आर.टी.) का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। पीयर रिव्यू टीम द्वारा राष्ट्रीय कृषि शिक्षा मान्यता बोर्ड की ओर से विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत सेल्फ स्टडी रिपोर्ट (एस.एस.आर) और अन्य दस्तावेजों का सत्यापन किया गया। इस पांच सदस्यीय पीयर रिव्यू टीम की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने की। टीम के अन्य सदस्यों में वेटरनरी विश्वविद्यालय, (लुवास) हिसार की वैज्ञानिक डॉ. मीनाक्षी प्रसाद, वेटरनरी विश्वविद्यालय, (गड़वासु) लुधियाना के अधिष्ठाता स्नातकोत्तर शिक्षा डॉ. एस.के. उप्पल, पूर्व अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या डॉ. आर.के. जोशी एवं प्रधान वैज्ञानिक कृषि विस्तार प्रभाग, नई दिल्ली डॉ. अरविंद कुमार थे।

वेटरनरी महाविद्यालय में नशा मुक्ति पर व्याख्यान



वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर में 17 सितम्बर को लोकभवन, जयपुर के निर्देशानुसार "नशा मुक्त भारत अभियान" के तहत नशा मुक्ति पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज की युवा पीढ़ी देश का मुख्य आधार है, इसलिए यह बेहद जरूरी है कि वे किसी भी प्रकार की नशे की लत से पूरी तरह दूर रहें। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों, शिक्षा और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में लगाएं, क्योंकि एक स्वस्थ, नशा–मुक्त और जागरूक युवा ही सशक्त व समृद्ध भारत की असली नींव का निर्माण करता है। मुख्य वक्ता नशा मुक्ति एवं पुनर्वास विशेषज्ञ डॉ. हरमीत सिंह ने पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन द्वारा विद्यार्थियों को नशे के प्रकार, कारक, नशे की विभिन्न अवस्थाओं एवं नशा मुक्ति के लिए आवश्यक बिन्दुओं की जानकारी प्रदान करते हुए विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंत में अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. पंकज कुमार थानवी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि नशा विनाश का द्वार है अतः विद्यार्थी वर्ग को नशे से दूर रहना चाहिए। इस दौरान डेयरी महाविद्यालय, बीकानेर में नशा मुक्ति पर आयोजित पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन डॉ. अशोक गोड़ द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संकाय सदस्य, कर्मचारी एवं वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर तथा डेयरी महाविद्यालय, बीकानेर के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

ग्राम बम्बलू में दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादन का मूल्य संवर्धन विषय पर कार्यक्रम

विश्वविद्यालय सामाजिक दायित्व के तहत पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा गोद लिए गाँव बम्बलू के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 26 सितम्बर को दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादन का मूल्य संवर्धन विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी. एन. श्रृंगी ने बताया की इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में डेयरी उद्योग में मूल्य संवर्धित उत्पादों के निर्माण एवं इससे व्यवसाय में होने वाले लाभ से जागरूक करवाना रहा। यु.एस.आर. समन्वयक, वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर डॉ. संजय सिंह ने विद्यार्थियों को स्वच्छ दुग्ध उत्पादन की जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर सहायक आचार्य डॉ. लोकेश टाक ने विद्यार्थियों को दुग्ध से बने विभिन्न मूल्य संवर्धित उत्पाद के प्रसंस्करण की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के आयोजन में विद्यालय की प्राचार्य निमिता चौधरी, व्याख्याता बजरंग दान चारण एवं अन्य शिक्षकों का सहयोग रहा।



दुग्ध व दुग्ध उत्पादों के मूल्य संवर्धन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय बीकानेर में सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत दुग्ध तथा दुग्ध उत्पादों का मूल्य संवर्धन विषय पर एक दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में गोद लिए गांव कतरियासर से 36 प्रतिभागी छात्राओं ने भाग लेकर दुग्ध उत्पादों की नई तकनीकों और उनके मूल्य संवर्धन की बारीकियों को सीखा। डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पंकज कुमार थानवी ने बताया की इस प्रशिक्षण के दौरान दुग्ध से बने विभिन्न उत्पादों जैसे पनीर, मसाला पनीर, छैना तथा संदेश इत्यादि दुग्ध उत्पादों के बनाने की प्रायोगिक जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षणार्थियों को बाजार की मांग को ध्यान में रखते हुए उत्पाद निर्माण गुणवत्ता, प्रबंधन और विपणन की रणनीतियों से भी अवगत कराया। कार्यक्रम के आयोजक एवं समन्वयक यूएसआर डॉ. सुनिल कुमार ने बताया की इस प्रकार के प्रशिक्षण ग्रामीण क्षेत्रो मे स्वरोजगार को बढ़ावा देने तथा आत्मनिर्भर बनाने में अहम भूमिका निभाते है।



विश्व रेबीज दिवस के अवसर पर श्वानों व बिल्लियों का हुआ रेबीज रोधी टीकाकरण

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 28 सितम्बर को वेटरनरी मेडीसिन विभाग एवं कैनाइन वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में 'विश्व रेबीज दिवस' के अवसर पर श्वानों एवं बिल्लियों के लिए एक दिवसीय निःशुल्क रेबीज टीकाकरण शिविर का आयोजन महाविद्यालय के चिकित्सा संकुल में किया गया। टीकाकरण शिविर का उद्घाटन कुलगुरु वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर डॉ. सुमंत व्यास ने किया एवं कहा कि आमजन में पालतु पशुओं में श्वानों के साथ–साथ बिल्लिया पालने की रूचि भी बढ़ी है अतः जन स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से इन पालतु पशुओं में रेबीज एवं अन्य बीमारियों के टीकाकरण की बहुत महत्ता है ताकी इन पशुओं को संक्रामक बीमारियों से बचाया जा सके। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, कार्यकारी निदेशक क्लिनिक ने बताया कि शिविर के दौरान 19 श्वानों व 31 बिल्लियों को निःशुल्क टीके लगाए गये एवं श्वान व बिल्ली पालकों में रेबीज रोग के बचाव हेतु जागरूकता उत्पन्न की गई। शिविर में अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी सहित डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. मनोहर सेन, डॉ. संध्या मोरवाल, डॉ. जे.पी कछावा, डॉ. प्रियंका कडेला एवं पी.जी. व पीएच. डी. विद्यार्थियों उपस्थित रहे।





पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 5, 15 व 28 सितम्बर को गंगानगर, डाबजल एवं 4जेड़ गांवो में तथा 11 सितम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 184 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 19 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 30 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 29 सितम्बर को केन्द्र परिसर में तथा 17 सितम्बर को गांव इन्द्रोका में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इस शिविर में 55 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 18 सितम्बर को केन्द्र परिसर में तथा 24 एवं 25 सितम्बर को गांव आजबर एवं पावटी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 72 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 18 सितम्बर को गांव खेड़ा काछवास में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 33 एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 5 एवं 25 सितम्बर को केन्द्र परिसर में तथा 23 सितम्बर को गांव राजपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा 8, 10, 15 एवं 17 सितम्बर को गांव राजपुरिया, कोहिना, हरदेसर एवं नौरंगसर एवं मेहरी राजवियां गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 85 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा 16 एवं 23 सितम्बर को गांव रठांजना एवं बोरा खेड़ी तथा 29 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 8 एवं 9 सितम्बर को गांव भगवानसर बास एवं गुडिया गांवों में तथा 10–24 सितम्बर को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 66 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





सफलता की कहानी

डेयरी फार्मिंग से मिली नई पहचान

श्रीगंगानगर जिले के गाँव ढाढिंयावाली के प्रगतिशील पशुपालक श्री टेकचन्द पुत्र श्री सत्यनारायण के पास 40 बीघा जमीन है। जमीन के साथ ही पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने का निर्णय लिया। इसी दौरान उन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा आयोजित एक दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इस प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई तथा वे केन्द्र के वैज्ञानिकों से निरंतर जुड़े रहे। डेयरी पालन में अच्छे मुनाफे को देखते हुए उन्होंने इसे विस्तार देने का निर्णय लिया। टेकचन्द ने शुरूआत में कम पशुओं से व्यवसाय शुरू किया। वर्तमान में इनके पास कुल 40 साहीवाल और राठी नस्ल के पशु हैं, जिनसे वे प्रतिदिन लगभग 175 लीटर से अधिक दूध का उत्पादन कर रहे हैं। इसके साथ यह गाय के दुध से मक्खन निकालने के बाद छाछ से राबड़ी बनाकर बाजार में बेचते है जिसे गर्मियों के मौसम में लोग बहुत पसंद करते है। इनके पास साहीवाल नस्ल का मानव नाम का एक बूल है जिसे इन्होंने 3 रू. लाख में खरीदा था, जिससे यह साहीवाल नस्ल की बछिंया तैयार करते है जिनसे यह अधिक मुनाफा प्राप्त करते है। यह अपने पशुओं का प्राथमिक उपचार भी केन्द्र के वैज्ञानिकों की सलाह लेकर स्वयं कर लेते हैं। केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा उन्हें समय–समय पर कृमिनाशक दवाओं का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल तथा नस्ल सुधार के माध्यम से दुग्ध उत्पादन बढ़ाने संबंधी आवश्यक जानकारियाँ प्रदान की जाती हैं। इस वैज्ञानिक मार्गदर्शन के कारण उनके डेयरी व्यवसाय में निरंतर प्रगति हुई है। पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था वे अपने खेतों से ही कर लेते हैं। उनकी सफलता से प्रेरित होकर गाँव के अन्य लोग भी डेयरी व्यवसाय अपना रहे हैं। आज टेकचन्द ने अपने क्षैत्र में एक सफल पशुपालक के रूप में अपनी पहचान स्थापित की है। वे अपने व्यवसाय से अत्यंत संतुष्ट हैं और इससे प्रतिवर्ष लगभग 20 से 25 लाख रुपये की आय अर्जित कर रहे हैं। अपनी सफलता का श्रेय वे अपने परिवार तथा पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ को देते हैं।



सम्पर्क: टेकचन्द
गांव–ढाढिंयावाली, सूरतगढ़ (मो. 9672930829)

मुर्गियों में बिछावन की भूमिका एवं महत्त्व

मुर्गीपालन न केवल एक स्थापित रोजगार के रूप में सामने आया है बल्कि कई लोगों ने इसे व्यापक स्तर पर अपनाकर मुनाफा भी कमाया है और साथ ही इसे मुख्य रोजगार के रूप में भी अपनाया है। देशभर में जो लोग खेती व अन्य व्यवसायों से जुड़े हैं, वे सभी मुर्गीपालन को व्यापारिक मुनाफे की नजर से देख रहे हैं। ऐसी स्थिति में मुर्गीपालन व इसके प्रबंधन से संबंधित विषयों में गहन ज्ञान होना बहुत जरूरी है। मुर्गीपालक को मुर्गियों की नस्ल, उनके लिए पोषक आहार, टीकाकरण और अन्य प्रबंधन संबंधी विषयों के बारे में जानकारी होना बहुत जरूरी है। ब्रॉयलर मुर्गी का पालन मांस उत्पादन के लिए किया जाता है। ब्रोयलर मुर्गी के बच्चों को पिंजरे के बजाय फर्श पर बिछावन डालकर पालते हैं। बिछावन की गहराई 2 से 5 इंच तक या इससे भी ज्यादा हो सकती है। यह मौसम के तापमान व आद्रता पर निर्भर करती है। एक अच्छे बिछावन की पहचान उसकी नमी सोखने की क्षमता पर निर्भर करती है।

बिछावन की भूमिका एवं महत्त्व

- बिछावन सामग्री फर्श के सतह क्षेत्र को बढ़ाती है और उसको जल्दी सूखने में मदद करती है।
- बिछावन पक्षी को और उसकी मलिच खाद के सम्पर्क को कम करता है।
- अमोनिया गैस के हानिकारक प्रभावों से बचाता है।
- बिछावन सीलन व ठंड से भी बचाव करता है।

बिछावन का चुनाव उसकी नमी सोखने की क्षमता, बाजार मूल्य, स्थानीय उपलब्धता और उसके विषम प्रभाव को लेकर किया जाता है। बिछावन सामग्री पक्षियों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं होनी चाहिए। चावल का छिलका और लकड़ी का बुरादा आजकल प्रचलन में है, पर इनका बाजार मूल्य अधिक होने के कारण अन्य वैकल्पिक सामग्रियों को बिछावन के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। जिनका बाजार मूल्य तेजी से बढ़ रहा है। इसके कारण ब्रोयलर उत्पादन का खर्चा बढ जाता है। अतः हमे विकल्प खोजने की जरूरत है। इसलिए हम चावल के छिलके और बुरादे की बजाय दूसरी स्थानीय सामग्रियों का इस्तेमाल कर सकते है जो इन्हीं की तरह नमी सोखने वाले हो और सस्ती भी हो। साथ ही साथ पक्षियों के लिए हानिकारक भी नहीं होनी चाहिए। भारत एक कृषि प्रधान देश है। चावल व गेंहूँ उत्तर भारत की प्रमुख फसले हैं। फसल कटाई के बाद किसान इनके बचे हुए हिस्सों को खेतों में जला देते है जो की प्रदूषण का कारण बनते है। इसे तुड़ी में बदलकर हम इसे बिछावन सामग्री के रूप में इस्तेमाल कर सकते है। इसके अलावा स्थानीय उपलब्ध वस्तुओं को भी बिछावन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है जैसे की सूखे पत्ते, मक्की के पिसे हुए बुटटे, मक्की व ज्वार की तूड़ी, रेत इत्यादि। किसी भी बिछावन सामग्री को इस्तेमाल करने से पहले यह सुनिश्चित कर ले की वह पक्षियों के लिए हानिकारक न हो। ज्यादातर स्थानीय सामग्रियों में धूल जमी होती है जो ब्रायलर पक्षियों में सांस संबंधी बीमारी पैदा कर सकती है।

बिछावन की क्षमता को कम करने के कारण

- शेड में से हवा पास न होना।
- पीने के पानी के प्रबंधन में त्रुटियाँ।
- उच्च लवणीय एवं प्रोटीन आहार।



- बिछावन की अपर्याप्त गहराई।
- कम जगह में ज्यादा ब्रायलर पक्षी रखना।
- बिछावन की खराब गुणवत्ता।
- शेड में अत्यधिक नमी।
- पक्षियों में एंर्टराइटिस की बीमारी आना।

बिछावन प्रबंधन यदि बिछावन में नमी की मात्रा बढ़ जाती है तो किसान बिछावन सामग्री की मात्रा बढ़ा सकते है। शेड से नमी को कम करने के लिए हवा का पास होना अति आवश्यक है, इसलिए इस और अवश्य ध्यान देना चाहिए। बिछावन सामग्री में नमी की मात्रा 30 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। नमी की मात्रा ज्यादा होने पर कोक्सीडीयोसिस नामक बीमारी के हालात बन जाते है। यह एक बहुत ही तेजी से फैलने वाली बीमारी है। इसकी रोकथाम के लिए बिछावन में नमी का नियंत्रण बहुत जरूरी है। बिछावन में नमी बढ़ने पर अमोनिया गैस भी पैदा होती है। मुर्गियों के शेड में अमोनिया गैस को आसानी से पहचाना जा सकता है। अमोनिया की गंध बहुत तीखी होती है। साथ ही यह ऑखों व त्वचा पर जलन भी पैदा करती है। गंध की मात्रा बढ़ने पर यह देखे की शेड से हवा पर्याप्त मात्रा में पास हो रही है अथवा नहीं। शेड में पंखे का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। पानी के बिछावन के ऊपर गिरने से भी नमी की मात्रा और बढ़ जाती है। अतः पानी का प्रबंधन उचित होना चाहिए। आहार के रूप में बिछावन सामग्री का उपयोग प्रयोग किये जा चुके बिछावन को हम भण्डारण कर, उसमें पैदा होने वाले बैक्टीरिया को खत्म कर सकते हैं और इसका उपचार कर इसको जुगाली करने वाले पशुओं के लिए आहार के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। बिछावन सामग्री को आहार के रूप में प्रयोग करने के लिए उसमें प्रोटीन की मात्रा 18 प्रतिशत से ज्यादा होनी चाहिए। कम प्रोटीन की अवस्था में हम इसे खाद के रूप में प्रयोग कर सकते है। बिछावन को उपचार करने के लिए हम दही को कल्चर के रूप में प्रयोग कर सकते है और मोलासिस को ऊर्जा स्त्रोत के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। फिर इस सामग्री को पॉलिथीन से ढ़क सके। बिछावन सामग्री को खेत में प्रयोग करने से पहले कृषि वैज्ञानिक से इसका परीक्षण जरूर करवायें। इससे हमें इसकी नाईट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम की मात्रा का पता लग जाता है। इसके बाद आवश्यकतानुसार कृत्रिम खाद मिला कर इसे खाद् के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

डॉ. सुभिता कुमारी
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

लम्पी रोग से बचाएं अपने पशुधन को

लम्पी स्किन डिजीज गाय एवं भैंसों में होने वाला एक महत्वपूर्ण संक्रामक विषाणुजनित रोग है। इसका कारण लम्पी स्कीन डिजीज वायरस है जो पोक्सविरिडी परिवार के केपरिपोक्स वायरस वंश से सम्बन्धित है। यह रोग मुख्य रूप से त्वचा पर कठोर गोलाकार गांठो के बनने के कारण पहचाना जाता है। यह रोग पशुपालकों के लिए आर्थिक रूप से अत्यंत विनाशकारी सिद्व होता है, क्योंकि इस रोग के कारण दूध उत्पादन में कमी, वजन घटना, प्रजनन संबधी समस्याएं तथा चमड़े की गुणवत्ता में कमी से पशुपालकों को आर्थिक नुकसान हो सकता हैं।

रोग का कारणः लम्पी स्किन डिजीज का कारक लम्पी स्किन डिजीज वायरस है। यह वायरस केपरिपोक्स वायरस समूह का सदस्य है। यह रोग मुख्यतः गाय और भैंस को प्रभावित करता है। मनुष्यों में यह रोग नहीं फैलता अर्थात् यह जूनोटिक रोग नही है।

रोग का प्रसारः लम्पी स्किन डिजीज का प्रसार मुख्य रूप से रक्त चूसने वाले कीटों के माध्यम से होता है। इनमें मच्छर, काटने वाली मक्खियां और कुछ चीचड़ प्रमुख भूमिका निभाते हैं। गर्म मौसम में जब ऐसे वाहक अधिक सक्रिय होते है, तब इस रोग के फैलने का जोखिम बढ़ सकता है। संक्रमित पशुओं की आवाजाही भी रोग को एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए प्शु मेले, बाजार या अन्य स्थानों से नए प्शु खरीदकर सीधे झुंड में शामिल करना जोखिमपूर्ण हो सकता है।

प्रमुख लक्षणः लम्पी स्किन डिजीज के नैदानिक लक्षण पशु की उम्र, रोग की गंभीरता, प्रतिरक्षा स्थिति तथा द्वितीयक संक्रमण की उपस्थिति के आधार पर अलग–अलग दिखाई दे सकते हैं। सामान्यतः संक्रमण के लगभग 4–14 दिनों बाद रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इस रोग में निम्नलिखित प्रमुख लक्षण देखे जा सकते है।

- **तेज बुखारः** रोग की शुरूआत तेज बुखार से हो सकती है, जो लगभग 40–41^0 सेन्टीग्रेड या इससे अधिक तक पहुंच जाता है। बुखार के दौरान पशु सुस्त रहता है तथा उसकी सामान्य शारीरिक गतिविधियां कम हो जाती है।
- **त्वचा पर कठोर गांठों का बननाः** त्वचा पर बनने वाली गोल, ठोस एवं उभरी हुई गांठें इस रोग की प्रमुख पहचान है। इनका आकार लगभग 2–5 सेमी या उससे अधिक हो सकता है। ये गांठे मुख्यतः गर्दन, कंधे, पीठ, जांघ, पेट, थन तथा जननांगों के आसपास दिखाई देती है।
- **त्वचा में सूजन एवं घावः** रोग बढ़ने पर गांठों के ऊपर की त्वचा क्षतिग्रस्त होकर फट सकती है तथा उनमें से सीरमी द्रव या मवाद निकल सकता है।
- **लिम्फ नोड्स में वृद्धिः** विशेष रूप से प्री–स्कैपुलर तथा प्री–फेमोरल लिम्फ नोड्स का आकार बढ़ सकता है। प्रभावित लिम्फ नोड्स में दर्द या सवेंदनशीलता भी देखी जा सकती है।
- **दूध उत्पादन में कमीः** दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में अचानक और उल्लेखनीय कमी हो सकती है। गंभीर संक्रमण के दौरान दूध की गुणवत्ता भी प्रभावित हो सकती है, जिससे पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पडता है।
- **आंख एवं नाक से स्त्रावः** कुछ पशुओं में आंखों से पानी अथवा मवाद जैसा स्त्राव तथा नाक से स्त्राव दिखाई दे सकता है। गंभीर स्थिति में श्वसन संबधी परेशानी भी उत्पन्न हो सकती है।
- **लंगड़ापन एवं चलने में कठिनाईः** पैरों, जोड़ो या उनके आसपास गांठो तथा सूजन के कारण पशु को चलने में परेशानी हो सकती है। गंभीर मामलों में पशु को खड़े होने में भी कठिनाई हो सकती है।
- **भूख में कमी एवं कमजोरीः** संक्रमित पशु चारा और पानी कम मात्रा में ग्रहण करता है। इसके परिणामस्वरूप शरीर में कमजोरी, वजन में कमी



तथा लम्बे समय तक बीमारी रहने पर शरीर की सामान्य स्थिति में गिरावट देखी जा सकती है।

- **प्रजनन संबधी समस्याएंः** गर्भित पशुओं में रोग के कारण गर्भपात की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। नर पशुओं में वृषण में सूजन तथा अस्थायी या कभी–कभी लम्बे समय तक रहने वाली प्रजनन संबधी समस्या देखी जा सकती है।
- **गंभीर मामलों में मृत्युः** अधिकांश मामलों में रोग से मृत्यु दर अपेक्षाकृत कम होती है, लेकिन छोटे बछड़ो, कमजोर पशुओं तथा गंभीर रूप से संक्रमित पशुओं में मृत्यु की संभावना बढ़ सकती है।

लम्पी स्किन डिजीज की प्रारम्भिक पहचान मुख्यतः पशु में दिखाई देने वाले विशिष्ट नैदानिक लक्षणों जैसे तेज बुखार, त्वचा पर कठोर गांठे, लिम्फ नोड्स का बढ़ना तथा त्वचा के घावों के आधार पर की जा सकती है। रोग की निश्चित पुष्टि के लिए प्रयोगशाला जांच आवश्यक होती है। इसके लिए प्रमुख रूप से पीसीआर जांच, वायरस आइसोलेशन तथा सीरोलॉजिकल परीक्षण का उपयोग किया जाता है। संदिग्ध पशु से उपयुक्त नमूने लेकर उन्हें मान्यता प्राप्त पशु रोग निदान प्रयोगशाला में भेजकर प्रयोगशाला स्तर पर पुष्टि की जा सकती है।

उपचार एवं देखभालः

- **बुखार, दर्द एवं सूजनः** पशुचिकित्सक की सलाह से ज्वरनाशक, दर्द निवारक एवं सूजनरोधी दवाएं दी जा सकती है।
- **द्वितीयक संक्रमणः** खुले घावों में जीवाणु संक्रमण होने पर उचित एंटीबायोटिक का उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से किया जाए।
- **घावों की देखभालः** घावों को नियमित रूप से साफ रखें और उपयुक्त एंटीसेप्टिक से उपचार करें।
- **पोषणः** पशु को पौष्टिक आहार, पर्याप्त हरा चारा और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराएं। आवश्यकतानुसार विटामिन एवं खनिज पूरक दें।

रोकथाम एवं नियत्रणः

- संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- मच्छर, मक्खी एवं अन्य रक्त चूषक कीटों का नियंत्रण करें।
- पशुशाला की नियमित सफाई एवं कीटाणुशोधन करें।
- पशुओं की अनावश्यक आवाजाही पर नियंत्रण रखें।
- नए पशुओं को झुंड़ में शामिल करने से पहले पृथक रखकर निगरानी करें।
- टीकाकरण एलएसडी की रोकथाम एवं नियंत्रण का प्रमुख उपाय है।

लम्पी स्किन डिजीज की रोकथाम में टीकाकरण सबसे महत्वपूर्ण उपायों में से एक है। टीकाकरण स्थानीय पशुपालन विभाग/पशुचिकित्सक की सलाह और सरकारी कार्यक्रम के अनुसार कराया जाना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

बकरी पालन : कम लागत में अधिक लाभ एवं ग्रामीण समृद्धि का सशक्त माध्यम

भारत में पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार है। कृषि के साथ पशुपालन न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार एवं आजीविका के स्थायी अवसर भी उपलब्ध कराता है। पशुपालन की विभिन्न गतिविधियों में बकरी पालन का विशेष स्थान है। इसे गरीब एवं सीमांत किसानों का महत्वपूर्ण सहायक व्यवसाय माना जाता है, क्योंकि इसमें अन्य बड़े पशुओं की तुलना में कम निवेश, कम स्थान तथा अपेक्षाकृत कम संसाधनों की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से राजस्थान जैसे शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में बकरी पालन ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने का एक प्रभावी माध्यम बन सकता है।

राजस्थान में बकरी पालन की संभावनाएँ

राजस्थान की भौगोलिक एवं जलवायु परिस्थितियाँ बकरी पालन के लिए अनुकूल हैं। यहाँ वर्षा की अनिश्चितता, सीमित सिंचाई सुविधाएँ तथा चारे की उपलब्धता में मौसमी उतार–चढ़ाव के बावजूद बकरियाँ अपनी अनुकूलन क्षमता के कारण कठिन परिस्थितियों में भी जीवित रह सकती हैं। 20 वीं पशुधन गणना (2019) के अनुसार, राजस्थान में बकरियों की कुल संख्या लगभग 2.08 करोड़ (20.84 मिलियन) दर्ज की गई थी, जो देश के सभी राज्यों में सर्वाधिक थी। यह आँकड़ा प्रदेश में बकरी पालन के व्यापक महत्व एवं इसकी आजीविका संबंधी संभावनाओं को दर्शाता है। बकरियाँ झाड़ियों, पेड़–पौधों की पत्तियों एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों का उपयोग आहार के रूप में कर सकती हैं। यही कारण है कि प्रदेश के ग्रामीण एवं पशुपालक समुदायों में बकरी पालन लंबे समय से आजीविका का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। राजस्थान में सिरोही, मारवाड़ी, जखराना एवं जमुनापारी जैसी बकरी नस्लें अपनी विशिष्ट उत्पादन विशेषताओं के लिए जानी जाती हैं। सिरोही नस्ल मांस उत्पादन एवं स्थानीय परिस्थितियों में अनुकूलन के लिए प्रसिद्ध है, जबकि जखराना नस्ल अपनी दुग्ध उत्पादन क्षमता के लिए पहचानी जाती है। उपयुक्त नस्ल का चयन क्षेत्र की जलवायु, उपलब्ध संसाधनों एवं पशुपालक के उद्देश्य के अनुरूप किया जाना चाहिए।

वैज्ञानिक प्रबंधन से बढ़ाएँ उत्पादन एवं लाभ

बकरी पालन को लाभकारी व्यवसाय बनाने के लिए केवल पशुओं की संख्या बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनका वैज्ञानिक प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। इसके अंतर्गत संतुलित आहार, उचित आवास, स्वास्थ्य सुरक्षा, प्रजनन प्रबंधन एवं समय–समय पर पशु स्वास्थ्य परीक्षण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

- **आवास प्रबंधन:** बकरियों के लिए ऐसा आवास होना चाहिए जहाँ पर्याप्त प्रकाश एवं हवा का आवागमन हो तथा वर्षा और ठंडी हवाओं से बचाव की व्यवस्था हो। फर्श सूखा, साफ एवं जल निकासी की उचित व्यवस्था वाला होना चाहिए। छोटे बच्चों, गर्भित बकरियों एवं बीमार पशुओं के लिए अलग स्थान की व्यवस्था करने से उनके बेहतर प्रबंधन में सहायता मिलती है।
- **पोषण प्रबंधन:** बकरियों को केवल चराई पर निर्भर रखना पर्याप्त नहीं है। उनकी आयु, शारीरिक अवस्था एवं उत्पादन क्षमता के अनुसार हरा चारा, सूखा चारा तथा संतुलित दाना उपलब्ध कराना चाहिए। गर्भावस्था के अंतिम चरण एवं दुग्ध उत्पादन के दौरान विशेष पोषण की आवश्यकता होती है। स्वच्छ पेयजल एवं खनिज मिश्रण की नियमित उपलब्धता भी आवश्यक है।
- **स्वास्थ्य प्रबंधन:** बकरियों में होने वाली संक्रामक बीमारियों से बचाव के लिए समय पर टीकाकरण, कृमिनाशक दवाओं का पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार उपयोग तथा नियमित स्वास्थ्य परीक्षण आवश्यक है। पीपीआर, एंटरोटॉक्सिमिया, बकरी चेचक एवं खुरपका–मुँहपका जैसी बीमारियों के विरुद्ध निर्धारित टीकाकरण कार्यक्रम अपनाना चाहिए। नए खरीदे गए पशुओं को कुछ समय तक अलग रखने से संक्रमण के प्रसार को रोका जा सकता है।
- **प्रजनन प्रबंधन:** अच्छी नस्ल एवं स्वस्थ प्रजनन योग्य पशुओं का चयन बकरी पालन की सफलता का महत्वपूर्ण आधार है। अनियोजित प्रजनन से बचते हुए उचित नर–मादा अनुपात बनाए रखना चाहिए। कमजोर, कम उत्पादन देने वाले तथा बार–बार बीमार पड़ने वाले पशुओं को प्रजनन समूह से हटाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

बकरी के दूध और मांस का बढ़ता महत्व

बकरी पालन से मांस, दूध, खाद एवं अन्य उत्पाद प्राप्त होते हैं। बकरी का दूध पोषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है तथा कुछ क्षेत्रों में इसकी स्थानीय मांग भी है। वहीं बकरी का मांस देश के विभिन्न भागों में उपभोक्ताओं द्वारा पसंद किया जाता है। त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर इसकी मांग में वृद्धि देखी जाती है। बकरी की बीट का उपयोग जैविक खाद के रूप में भी किया जा सकता है, जिससे खेतों की उर्वरता बनाए रखने में सहायता मिलती है। बकरी पालन में उत्पादों के बेहतर विपणन के लिए पशुपालकों को स्थानीय बाजार की मांग, पशुओं के वजन, स्वास्थ्य एवं गुणवत्ता के आधार पर बिक्री की योजना बनानी चाहिए। बिचौलियों पर निर्भरता कम करने के लिए पशुपालक समूहों एवं किसान उत्पादक संगठनों के माध्यम से सामूहिक विपणन को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

महिला सशक्तिकरण एवं ग्रामीण उद्यमिता में भूमिका

बकरी पालन ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। छोटे स्तर पर बकरी पालन शुरू करके महिलाएँ परिवार की आय में योगदान दे सकती हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से बकरी पालन को संगठित व्यवसाय के रूप में विकसित किया जा सकता है। युवाओं के लिए भी यह व्यवसाय स्वरोजगार एवं उद्यमिता की संभावनाएँ प्रस्तुत करता है। इसके लिए आवश्यक है कि पशुपालकों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण, बैंक ऋण, बीमा सुविधाओं, पशु स्वास्थ्य सेवाओं एवं बाजार से जोड़ने की दिशा में प्रयास किए जाएँ। प्रशिक्षण के माध्यम से पशुपालकों को नस्ल चयन, संतुलित आहार, आवास निर्माण, टीकाकरण एवं आर्थिक प्रबंधन की व्यावहारिक जानकारी प्रदान की जा सकती है।

जलवायु अनुकूल एवं टिकाऊ बकरी पालन

बदलती जलवायु परिस्थितियों में बकरी पालन की उपयोगिता और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। हालांकि बकरियाँ कठिन परिस्थितियों में अनुकूलन की क्षमता रखती हैं, फिर भी अत्यधिक गर्मी, जल संकट एवं चारे की कमी उनके स्वास्थ्य एवं उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। अतः गर्मी के मौसम में छायादार आवास, पर्याप्त स्वच्छ पानी तथा संतुलित आहार की व्यवस्था आवश्यक है। चरागाहों का वैज्ञानिक उपयोग, स्थानीय चारा प्रजातियों का संरक्षण, चारा वृक्षों का रोपण एवं उपलब्ध कृषि अवशेषों का उचित उपयोग बकरी पालन को अधिक टिकाऊ बना सकते हैं। विशेष रूप से खेजड़ी, बेर एवं अन्य स्थानीय वृक्षों की पत्तियाँ शुष्क क्षेत्रों में पशुओं के लिए उपयोगी आहार संसाधन हैं। हालांकि इनके उपयोग में संतुलित आहार की आवश्यकता को ध्यान में रखना चाहिए।

पशुपालकों के लिए आवश्यक सुझाव

बकरी पालन को सफल एवं लाभकारी व्यवसाय बनाने के लिए पशुपालकों को कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- व्यवसाय प्रारंभ करने से पहले स्थानीय जलवायु एवं बाजार के अनुरूप नस्ल का चयन करें।
- स्वस्थ एवं रोगमुक्त पशुओं को विश्वसनीय स्रोत से खरीदें।
- पशुओं की आयु, वजन, टीकाकरण एवं प्रजनन का नियमित रिकॉर्ड रखें।
- पशुओं को स्वच्छ पानी एवं संतुलित आहार उपलब्ध कराएँ।
- नियमित टीकाकरण एवं कृमिनाशन करवाएँ।
- बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- पशुओं का बीमा करवाने एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करें।
- वैज्ञानिक प्रशिक्षण एवं पशु चिकित्सकों की सलाह को अपनाएँ।

निष्कर्ष

बकरी पालन केवल पारंपरिक पशुपालन गतिविधि नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने वाला एक संभावनाशील व्यवसाय है। राजस्थान जैसे शुष्क प्रदेश में इसकी उपयोगिता और भी अधिक है। यदि पारंपरिक अनुभव के साथ वैज्ञानिक तकनीकों का समन्वय किया जाए, तो बकरी पालन किसानों, महिलाओं एवं ग्रामीण युवाओं के लिए आय, रोजगार एवं आत्मनिर्भरता के नए अवसर उत्पन्न कर सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि बकरी पालन को छोटे स्तर की सहायक गतिविधि के बजाय एक सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक उद्यम के रूप में विकसित किया जाए। विश्वविद्यालयों, पशुपालन विभागों एवं प्रसार संस्थाओं के संयुक्त प्रयासों से वैज्ञानिक तकनीकों को गाँवों तक पहुँचाकर बकरी पालकों की उत्पादन क्षमता एवं आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। वास्तव में, ''वैज्ञानिक बकरी पालन ग्रामीण समृद्धि, महिला सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भर राजस्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।''

डॉ. रेणु कुमारी एवं डॉ. संजय सिंह
राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

लम्पी स्किन डिजीज से बचाव: जागरूकता ही सबसे बड़ा सुरक्षा कवच





पशुधन ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं पशुपालक परिवारों की आजीविका का महत्वपूर्ण आधार है। विशेष रूप से राजस्थान जैसे पशुधन प्रधान राज्य में स्वस्थ एवं उत्पादक पशुधन प्रदेश की समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः पशुओं को संक्रामक रोगों से सुरक्षित रखना केवल पशुपालक ही नहीं बल्कि हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। लम्पी स्किन डिजीज गौवंश में होने वाला एक महत्वपूर्ण संक्रामक वायरल रोग है, जो पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादन क्षमता तथा पशुपालकों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकता है। इस रोग में सामान्यतः बुखार, त्वचा पर गांठें अथवा घाव, भूख में कमी, कमजोरी तथा दुग्ध उत्पादन में कमी जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। ऐसे लक्षणों की समय पर पहचान एवं पशु चिकित्सकीय परामर्श रोग के प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लम्पी स्किन डिजीज की रोकथाम में जागरूकता, समय पर टीकाकरण, स्वच्छता एवं वैज्ञानिक पशु प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हैं। पशुपालकों को अपने पशुओं का नियमित निरीक्षण करना चाहिए तथा किसी भी असामान्य लक्षण की स्थिति में प्रभावित पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखते हुए तत्काल निकटतम पशु चिकित्सा संस्था अथवा पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। नए पशुओं को सीधे झुंड में शामिल करने के बजाय कुछ समय तक अलग रखकर उनकी निगरानी करना भी आवश्यक है। पशुशाला को स्वच्छ एवं सूखा रखने, पानी के जमाव को रोकने तथा मक्खी, मच्छर, किलनी एवं अन्य बाह्य परजीवियों के नियंत्रण के प्रभावी उपाय अपनाने से रोग के प्रसार की संभावना को कम किया जा सकता है। पशुपालकों को विभागीय दिशा–निर्देशों के अनुसार पशुओं का समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए तथा रोग की स्थिति में स्वयं से दवा देने या अप्रमाणित उपचार पद्धतियों पर निर्भर रहने के बजाय योग्य पशु चिकित्सक की सलाह को प्राथमिकता देनी चाहिए। किसी भी संक्रामक रोग के नियंत्रण में पशुपालकों और पशु चिकित्सा विभाग के बीच सक्रिय सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। समय पर सूचना, उचित उपचार, प्रभावी जैव–सुरक्षा एवं निरंतर निगरानी के माध्यम से रोग के प्रसार को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है। हमें यह समझना होगा कि पशु स्वास्थ्य की सुरक्षा केवल बीमारी होने के बाद उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि रोग की रोकथाम, स्वच्छता, टीकाकरण और नियमित स्वास्थ्य निगरानी को दैनिक पशुपालन व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बनाना आवश्यक है। आज आवश्यकता है कि हम पारंपरिक पशुपालन अनुभव को आधुनिक पशु चिकित्सा विज्ञान एवं वैज्ञानिक प्रबंधन के साथ जोड़कर पशुपालन को अधिक सुरक्षित, उत्पादक एवं टिकाऊ बनाएं। स्वस्थ पशु ही स्वस्थ एवं समृद्ध पशुपालक की आधारशिला है। मैं, प्रदेश के सभी पशुपालकों से आग्रह करता हूँ कि वे लम्पी स्किन डिजीज सहित अन्य पशु रोगों के प्रति सजग रहें, अपने पशुओं के स्वास्थ्य में होने वाले परिवर्तन को गंभीरता से लें और समय पर पशु चिकित्सकीय सहायता प्राप्त करें। जागरूक पशुपालक, स्वस्थ पशुधन और वैज्ञानिक पशुपालन के सामूहिक प्रयासों से हम न केवल पशुधन की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं, बल्कि प्रदेश के पशुपालक परिवारों की आर्थिक समृद्धि को भी नई दिशा दे सकते हैं। आइए, हम सभी मिलकर ''जागरूकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामूहिक सहभागिता'' के माध्यम से स्वस्थ पशुधन, समृद्ध पशुपालक और सशक्त राजस्थान के निर्माण में अपना योगदान दें।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
संपादक
डॉ. संजय सिंह
डॉ. वैशाली
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया